हफ़्तावार रिसाला : 315

Weekly Booklet : 315

फ़ैज़ाने उम्मे अ़त्तार

सफ़ह़ात 26

- उम्मे अ़त्तार का तआ़रुफ़ 06
- 75 रुपै में घर का गुज़ारा 09
- उम्मे अ़त्तार की बा'ज़ ख़ुसूसिय्यात 12
- मय्यित से ज़ाहिर होने वाली ह़ैरत अंगेज़ बातें 20

पेशकश :

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**फ़ैज़ाने उम्मे अ़त्त़ार**
सिने त़बाअ़त	:	सफ़रुल मुज़फ़्फ़र **1445** हि., अगस्त **2023** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **"फ़ैज़ाने उम्मे अ़त्तार"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج۵۱ ص۱۳۸دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

पहले इसे पढ़ें

अल्लाह पाक की इन्सान के लिये एक बड़ी ने'मत "**वालिदैन**" भी हैं। वालिदैन की शराफ़त व इ़बादत का असर औलाद पर ज़रूर पड़ता है। वालिदैन नेक सीरत और बा अख़्लाक़ हों तो औलाद भी नेकी के रास्ते पर चलती नज़र आती है, ख़ुश नसीब हैं वोह वालिदैन जो अपनी औलाद की अच्छी तरबियत करें। शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते गिरामी तआ़रुफ़ की मोह़ताज नहीं। आप की उ़म्र तक़रीबन एक दो साल थी कि आप के अब्बूजान ह़ज पर गए और वहां फ़ौत हो गए। आप की अम्मीजान ने आप की परवरिश और ता'लीमो तरबियत का इन्तिज़ाम किया। दा'वते इस्लामी के चेनल पर होने वाले अमीरे अहले सुन्नत के मुख़्तलिफ़ मदनी मुज़ाकरों के सुवाल जवाब और दीगर प्रोग्राम्ज़ के मदनी फूलों और मुख़्तलिफ़ किताबों और तह़रीरों वग़ैरा से रोशनी ले कर येह मज़्मून बनाम "**फ़ैज़ाने उम्मे अ़त्तार**" तय्यार किया गया जो आप की अम्मीजान की 47वीं बरसी 17 सफ़र शरीफ़ 1445 हिजरी (2023) के मौक़अ़ पर मन्ज़रे आ़म पर आया है। इस का मुत़ालआ़ करने से अमीरे अहले सुन्नत की अम्मीजान के बारे में मुख़्तलिफ़ मा'लूमात ह़ासिल होने के साथ साथ एक "**मां को कैसा होना चाहिये**" इस बारे में भी मदनी फूल मिलेंगे और इस्लामी भाई और इस्लामी बहन दोनों के लिये येह रिसाला यक्सां फ़ाएदे मन्द साबित होगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہُ الْکَرِیْم

सवाब ह़ासिल करने और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये इस रिसाले को ख़ूब आ़म कीजिये और ढेरों नेकियां ह़ासिल कीजिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

फ़ैज़ाने उम्मे अ़त्तार

दुआ़ए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या अल्लाह करीम ! जो मेरी दादीजान के बारे में रिसाला : **"फ़ैज़ाने उम्मे अ़त्तार"** के 23 सफ़हात पढ़ या सुन ले उसे और उस के सारे ख़ानदान को नेक नमाज़ी और सच्चा आ़शिक़े रसूल बना । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद भेजा, **अल्लाह** पाक उस पर दस मरतबा दुरूद (या'नी रह़मत) भेजता है और जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूद भेजा, **अल्लाह** पाक उस पर सो मरतबा दुरूद (या'नी रह़मत) भेजता है और जिस ने मुझ पर हज़ार मरतबा दुरूद भेजा, जन्नत के दरवाज़े पर उस का कन्धा मेरे कन्धे के साथ होगा ।

(مطالع المسرّات، ص52 بحوالہ شفاء الصدور)

बचें बेकार बातों से, पढ़ें ऐ काश कसरत से
तेरे मह़बूब पर हर दम, दुरूदे पाक हम मौला

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ख़ुश्बूदार जगह

1398 हिजरी मुत़ाबिक़ 1978 ईसवी की बात है । **"बादामी मस्जिद"** के क़रीब एक इमाम साह़िब अपनी अम्मीजान वग़ैरा के साथ रहा

करते थे। माहे सफ़र की 17वीं रात नमाज़े इशा पढ़ाने के लिये जाने लगे तो अपनी अम्मीजान के पास आए। इमाम साहि़ब की दीनी मा'लूमात **"आ़लिमे दीन"** से कम न थीं। बीमार मां की ज़िन्दगी की आज आख़िरी रात थी। ख़ुश बख़्त बेटे ने नमाज़े इशा के लिये जाने की इजाज़त चाही तो है़रत अंगेज़ त़ौर पर अम्मीजान ने फ़रमाया : बेटा ! अपने हाथ लाओ ताकि मैं चूमूं, सआ़दत मन्द बेटे ने कहा : मां ! येह कैसी बात कर रही हैं ? मैं आप के हाथ चूमूंगा। बिल आख़िर दोनों ने एक दूसरे के हाथ चूम लिये। इस अ़क़ीदतो मह़ब्बत भरे अन्दाज़ से फ़ारिग़ हो कर वोह नौ जवान इमाम साहि़ब घर से मस्जिद की जानिब नमाज़ पढ़ाने के लिये रवाना हुए और नमाज़े इशा अदा कर के ह़स्बे मा'मूल वहां होने वाले हफ़्तावार इज्तिमाअ़[1] में अपनी बारी आने पर वोह ह़ाज़िरीन के सुवालात के जवाबात देने में मश्ग़ूल थे कि एक लड़का उन को घर बुलाने के लिये आया, मगर वोह दीनी मसाइल बताने में मश्ग़ूल रहे, कुछ ही देर में वोह लड़का फिर आ गया और क़रीब आ कर बोला या किसी के ज़रीए़ कहलवाया कि आप की बड़ी बहन आप को घर बुला रही हैं तो अब उस नौ जवान को खटका हुवा कि शायद मां की त़बीअ़त ख़राब हो गई होगी, दर अस्ल चन्द दिन क़ब्ल इतवार को अम्मीजान की त़बीअ़त ख़राब हुई तो वोह इमाम साहि़ब डॉक्टर को घर बुला कर लाए थे और डॉक्टर ने चेकअप कर के इशारों में कुछ कहा जिस से ऐसा लगा कि दिल का कुछ मस्अला हुवा है। बस फिर क्या था इमाम साहि़ब ने अपने पास मौजूद एक दोस्त के कान में कहा : शायद अम्मीजान

1... اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم ! अमीरे अहले सुन्नत दा'वते इस्लामी के आग़ाज़ से भी पहले लोगों को दीनी मसाइल सिखाते थे और हर जुमे'रात मस्जिद में दीनी मसाइल के बारे में सुवाल जवाब का सिल्सिला हुवा करता था।

को कुछ हुवा है, मैं घर जा रहा हूं, आप भी पहुंचें, जब जल्दी से घर पहुंचे तो क्या देखा कि अम्मीजान पर सकरात की कैफ़िय्यत (या'नी मौत) त़ारी है और ज़बान बन्द हो गई है और मौत के झटके आ रहे हैं। बड़ी बहन ने भाई को बताया : अम्मीजान आप को बहुत याद कर रही थीं (दर अस्ल येह नौ जवान अपने वालिदैन का सब से छोटा बेटा था। मां प्यार से इसे "**बाबू**" बोलती थीं।) मां ने बार बार कहा : मेरे बाबू को बुलाओ, कहीं वोह मुझ से दूर न रह जाए, उसे जल्दी बुलाओ ! हम ने अम्मीजान को ज़मज़म शरीफ़ पिलाया फिर इन को इस्तिग़फ़ार और कलिमा शरीफ़ भी पढ़ाया। मगर आह ! जब आप पहुंचे तो मां का होश जाता रहा था और इन्हों ने बातचीत करना बन्द कर दी थी। नेक बख़्त बेटे ने इस अलम नाक (या'नी दर्दनाक) मन्ज़र को देख कर जैसे तैसे अपने आप को संभाला और फ़ौरन सूरए यासीन शरीफ़ की तिलावत शुरूअ़ कर दी क्यूं कि ह़दीसे पाक में फ़ौत होने वाले के पास सूरए यासीन शरीफ़ पढ़ने की तरग़ीब है।[1] रात तक़रीबन सवा दस बजे तिलावते क़ुरआने करीम के दौरान अम्मीजान की रूह़ जिस्म से जुदा हो गई। ग़ुस्ल के बा'द चेह्रए मुबारका काफ़ी रोशन हो गया और जिस जगह वालिदा की रूह़ क़ब्ज़ हुई उस ज़मीन से ख़ुश्बू आती रही और वफ़ात के तक़रीबन चालीस दिन तक रात सवा दस बजे घर में बड़ी महकी महकी भीनी भीनी ख़ुश्बू आती रही। वोह इमाम साह़िब अपने दोस्तों को रात के वक़्त अपने घर लाते और उन को वोह ग़ैबी ख़ुश्बू सुंघाते, तीजे के

1... सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस मरने वाले के सिरहाने सूरए यासीन शरीफ़ तिलावत की जाती है **अल्लाह** पाक उस पर आसानी फ़रमाता है। (موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 5/454، حدیث:195) एक और ह़दीसे पाक में हैं : अपने मुर्दों के पास सूरए यासीन पढ़ो। (ابوداؤد، 3/256، 257، حدیث:3121)

(या'नी इन्तिक़ाल के तीसरे) दिन जब इमाम साहिब ने अपनी वालिदा की क़ब्र पर फूल रखे तो शाम तक वोह फूल तरो ताज़ा रहे और उन का हाथ सारा दिन उन फूलों की खुश्बूओं से महक्ता रहा। **अल्लाह** पाक की रह़मत से क्या बईद कि लोगों को दिखाना मक़्सूद हो कि सह़ाबा व अहले बैत عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से मह़ब्बत करने वाली, ग़ौसो ख़्वाजा رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡهِمَا की चाहने वाली इस शान से दुन्या से गई कि हर त़रफ़ खुश्बू फैल गई। येह सब ग़ुलामिये मुस्त़फ़ा का सदक़ा है, जिस पर उन की नज़र हो जाती है तो न सिर्फ़ उस से बल्कि उस की बरकत से आ़लम महक उठता है।

इन की तुर्बत पे बारिश हो अन्वार की   मौला रुत्बा बढ़ा उम्मे अ़त्तार का

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه लिखते हैं :

वासित़ा प्यारे का ऐसा हो कि जो सुन्नी मरे   यूं न फ़रमाएं तेरे शाहिद कि वोह फ़ाजिर गया

अ़र्श पर धूमें मचें वोह मोमिने सालेह़ मिला   फ़र्श से मातम उठे वोह त़य्यिबो त़ाहिर गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 53)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب   صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

क्या आप जानते हैं येह नेक सीरत नौ जवान, दीनी मसाइल सिखाने वाला मस्जिद का पेश इमाम और अम्मीजान के हाथ चूमने वाला सआ़दत मन्द बेटा कौन था ? जी हां ! येह कोई और नहीं बल्कि बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ (या'नी **अल्लाह** पाक इन का चेहरा रोशन करे) थे और फ़ौत होने वाली खुश नसीब ख़ातून इन की अम्मीजान थीं।

जन्नत में दाख़िला

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अम्मीजान पर कितना करम हुवा कि आबे ज़मज़म शरीफ़ पी कर कलिमा व इस्तिग़फ़ार पढ़ कर फ़ौत हुईं। **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : “जिस का आख़िर कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ (या'नी कलिमए त़य्यिबा) हो, वोह जन्नत में दाख़िल होगा।” (ابوداؤد،3/255،حدیث:3116) रब्बे ग़फ़्फ़ार उम्मे अ़त्तार के मज़ार पर अपनी रह़मतों की बारिश फ़रमाए।

नाज़िल हो सदा रह़मत के गुहर अ़त्तार की प्यारी अम्मी पर
हो प्यारे नबी की ख़ास नज़र अ़त्तार की प्यारी अम्मी पर

अमीरे अहले सुन्नत की अम्मीजान की वफ़ात के इस वाक़िए में हमारे लिये एक बात येह भी सीखने की है कि अमीरे अहले सुन्नत से इन की अम्मीजान ख़ूब मह़ब्बत करती थीं, जभी तो अम्मीजान ने इन से फ़रमाया कि आज मैं तुम्हारे हाथ चूमूंगी। **काश !** गुफ़्तार (या'नी बातों) के ग़ाज़ी बनने के बजाए हम अपने किरदार में सुधार लाएं। जब दुन्या वाले किसी को अच्छा समझें तो बेशक वोह अच्छा लेकिन जब किसी के किरदार की गवाही उस के घर वाले भी दें उस वक़्त उस की अच्छाई के क्या कहने ! **अल्लाह** करीम अमीरे अहले सुन्नत के सदक़े हमें नेक सीरत बनाए।

हूं ब ज़ाहिर बड़ा नेक सूरत, कर भी दे मुझ को अब नेक सीरत
ज़ाहिर अच्छा है बात़िन बुरा है, या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

उम्मे अ़त्तार का तआ़रुफ़

अमीरे अहले सुन्नत की अम्मीजान का नाम **"अमीना बिन्ते ह़ाजी हाशिम"**(1) था। आप हिन्द के सूबे गुजरात, रियासत **"जूनागढ़"** के एक गाउं कुतियाना में पाक व हिन्द की तक़्सीम से पहले पैदा हुईं। आप नेक और परहेज़ गार ख़ातून थीं। आप के एक भाई और तीन बहनें थीं। भाई का नाम "नूर मुह़म्मद भुन्डी" और बहनों के नाम राबिआ़, आ़इशा और ह़व्वा थे। अमीरे अहले सुन्नत की नानीजान का नाम **"ह़लीमा"** था।

अमीरे अहले सुन्नत की 3 ख़ालाएं

अमीरे अहले सुन्नत का अपनी ख़ाला राबिआ़ के हां बारहा जाना होता रहा। दूसरी ख़ाला आ़इशा कोलम्बो में रहती थीं। 1979 में अमीरे अहले सुन्नत जब पहली बार कोलम्बो तशरीफ़ ले गए थे उस वक़्त उन से मुलाक़ात हुई थी। निहायत ग़ुर्बत की ह़ालत में वक़्त गुज़ार रही थीं। उन के बच्चों के अब्बू का नाम **"अह़मद पघ्घी"** था। जिन्हों ने अमीरे अहले सुन्नत से उन के अब्बूजान का क़सीदए ग़ौसिया वाला(2) वाक़िआ़ बयान किया था। तीसरी ख़ाला ह़व्वा थीं। अमीरे अहले सुन्नत की इन से कभी मुलाक़ात या ज़ियारत न हुई। उन के बारे में मा'लूमात मिलीं कि वोह मद्रास हिन्द(3) में रहती थीं।

1... ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की एक साहिब ज़ादी का नाम भी अमीना था। (ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात, स. 185)

2... येह वाक़िआ़ तफ़्सील से पढ़ने के लिये अमीरे अहले सुन्नत के वालिद साहिब की सीरत पर मुश्तमिल रिसाला "फ़ैज़ाने अबू अ़त्तार" पढ़िये।

3... मद्रास का अब नाम चेन्नई है येह हिन्द की रियासत तामिलनाडु का दारुल हुकूमत और मुल्क का चौथा बड़ा शहर है।

मामूंजान की त़रफ़ से दा'वत

अमीरे अहले सुन्नत के एक ही मामूंजान थे जिन का नाम **"नूर मुह़म्मद भुन्डी"**(1) था। मामूंजान का घर क्या था बस एक ही कमरा, जिस पर मचान (Mezzanine) सी बनी हुई थी, उस में बूढ़ी नानी लैटी रहती थीं, मचान ऐसी थी कि ऊपर जाएं तो सीधे खड़े नहीं हो सकते थे क्यूं कि सर छत से टकराता था। मामूंजान कभी कभी अपनी बहन या'नी उम्मे अ़त्तार की दा'वत करते। जिस में अमीरे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं : हम बहन भाई मिल कर जाते। अमीरे अहले सुन्नत के मामूंजान ईद के मौक़अ़ पर घर आते और ईदी में अपने भान्जे, भान्जियों को अठन्नी या'नी आधा रुपिया देते। (मदनी मुज़ाकरा बनाम रूयते हिलाल, 28 रमज़ान 1439)

मदद कर के दुआ़ न करवाइये

अमीरे अहले सुन्नत अपने मामूंजान का एक मुन्फ़रिद वाक़िआ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : एक मरतबा मामूंजान ने मुझे किसी ग़रीब को खाना पहुंचाने के लिये दिया। मेरे मुंह से निकला : मैं फ़क़ीर को खाना दे कर उस से कहूंगा कि हमारे लिये दुआ़ करना। मामूंजान ने फ़रमाया : फ़क़ीर को खाना दे कर उस से दुआ़ का कहना तो गोया ऐसा हुवा कि आप ने खाना देने की नेकी का बदला मांग लिया। (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 7 बित्तसर्रुफ़)

مَاشَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم ! मामूंजान की इतनी गहरी सोच की भी क्या बात है! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم से भी इस त़रह़ के अन्दाज़ किताबों में लिखे हैं जैसा कि तमाम मुसल्मानों की प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा और ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا जब फ़क़ीर की त़रफ़

1... मेमन कम्यूनिटी में भुन्डी Surname है।

कोई तोह़फ़ा भेजतीं तो ले जाने वाले से फ़रमातीं : उस के दुआइया अल्फ़ाज़ याद रखे, फिर उस जैसे अल्फ़ाज़ के साथ जवाब देतीं और फ़रमातीं : दुआ के बदले इस लिये दुआ दी है ताकि हमारा सदक़ा (या'नी उन को दी हुई ख़ैरात का सवाब) मह़फ़ूज़ रहे।

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ येह वाक़िआ ज़िक्र करने के बा'द लिखते हैं : अल ग़रज़ ! सालिह़ीन (या'नी नेक बन्दे) तो दुआ की तवक़्क़ोअ़ भी नहीं रखते थे क्यूं कि येह बदले के मुशाबेह (या'नी मिलता जुलता) है और वोह दुआ के बदले दुआ दिया करते थे। मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ और आप के बेटे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا भी ऐसा ही किया करते थे। (احیاء العلوم، 1/292)

हो सकता है मामूंजान के पेशे नज़र बुज़ुर्गों के येह आ'माल हों जिस वज्ह से उन्हों ने अपने भान्जे को इस पर अ़मल की तरग़ीब दिलाई। **अल्लाह** करीम हमें भी अपनी रिज़ा के लिये ग़रीबों की मदद करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की इन सब पर अपनी रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते़ हो　　कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मामूंजान की वफ़ात का दर्दनाक वाक़िआ

अफ़्सोस ! मामूंजान की वफ़ात बड़े दर्दनाक अन्दाज़ में हुई चुनान्चे मामूंजान अपनी पहली बेटी की शादी के जहेज़ का सौदा कर के वापस घर

आ रहे थे कि बस पर चढ़ते हुए पाउं फिसला और आह ! मामूंजान चलती बस से गिरे और उन का सर पहिये के नीचे आ गया और फ़ौत हो गए। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त मर्हूम की बे हि़साब मग़्फ़िरत फ़रमाए और इन के सदक़े हमें भी बख़्श दे। أمين بجاهِ خاتَمِ النّبِيّين صلى الله عليه واله وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

75 रुपै में घर का गुज़ारा

अब्बूजान की वफ़ात के बा'द अमीरे अहले सुन्नत के बड़े भाई "अ़ब्दुल ग़नी" ने अपनी बिरादरी कुतियाना मेमन एसोसीएशन के एक दवाख़ाने पर मुलाज़मत (Job) इख़्तियार की। जहां उन्हें शुरूअ़ में माहाना 75 रुपै तनख़्वाह (Salary) मिलती। जिस से वोह अपनी बेवा मां और यतीम भाई बहनों की ख़िदमत करते।

उम्मे अ़त्तार की ख़ुद्दारी

अमीरे अहले सुन्नत की उ़म्र डेढ़ या दो साल होगी कि इन के अब्बूजान ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़ज पर गए और मिना शरीफ़ में सख़्त लू चलने के बाइ़स ग़ालिबन 14 ज़िल ह़ज शरीफ़ को फ़ौत हो गए। घर के सरबराह का इन्तिक़ाल होने के बा'द घर की सारी ज़िम्मेदारी गोया अमीरे अहले सुन्नत की अम्मीजान पर आ गई। उन्हों ने इन सख़्त मुश्किल ह़ालात में अपने बच्चों को संभाला और मेह़नत मज़दूरी कर के घर चलाती रहीं।

दो दाने मुआ़फ़ करवाए

अमीरे अहले सुन्नत की अम्मीजान घर पर भुने हुए चने और मूंगफलियां छीलने के लिये लातीं, एक सेर[1] चने छीलने पर चार आने और

1... तक़्रीबन पचास साल पहले वज़्न और रुपों का हि़साब इस त़रह़ होता था। अब तक़्रीबन येह निज़ाम ख़त्म हो गया है, एक सेर किलो से कुछ कम होता है जब कि एक रुपै में 16 आने होते थे। अब किलो ग्राम और रुपै में वज़्न और क़ीमत बयान होती है।

एक सेर मूंगफली छीलने पर एक आना मिला करता। घर के सब अफ़राद मिल कर छीलते। काम के दौरान अमीरे अहले सुन्नत जो कि उन दिनों ग़ालिबन चार पांच साल के होंगे, दो चार दाने खा लेते तो वालिदा से कहते : मां सेठ से मुआ़फ़ करवा लेना। अम्मीजान मज़दूरी लेते वक़्त कभी सेठ को कह देतीं : बच्चे दो दाने खा लेते हैं, मुआ़फ़ कर देना।

घर में इ़बादत का रुज्ह़ान

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! हमारे घर का माह़ोल दीनी था, मेरे बड़े भाई और वालिदा वग़ैरा मिल कर चादर बिछा कर बादामों पर कुछ पढ़ते थे। कमसिन होने की वज्ह से मुझे येह याद तो नहीं कि क्या पढ़ते थे अलबत्ता घर का माह़ोल इ़बादात व नमाज़, रोज़े वाला था। (मदनी मुज़ाकरा, 09 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1442 हि.)

अम्मीजान की बरकत से सारा घर नमाज़ी

घर में हर महीने ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक رحمۃ اللہ علیہ की ग्यारहवीं के सिल्सिले में नियाज़ होती। उम्मे अ़त्तार नमाज़ रोज़े की पाबन्द थीं। अमीरे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! मैं ने जब होश संभाला तो घर में नमाज़, मुसल्ला और अम्मीजान को चादर ओढ़ कर नमाज़ पढ़ते देखा। बिल ख़ुसूस नमाज़े फ़ज्र के लिये मुझे उठाया करतीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! कड़कड़ाती सर्दी में भी मस्जिद की ह़ाज़िरी से मुशर्रफ़ होता था। (प्रोग्राम : पुरानी यादें, क़िस्त : 2 ब तग़य्युर)

जैसी मां वैसी औलाद

उम्मे अ़त्तार की मुश्कबार ज़िन्दगी के इस ह़िस्से में हमारी इस्लामी बहनों के लिये बड़ा दर्स है। काश ! जिस त़रह़ मां अपने बच्चों को सुब्ह़ सवेरे स्कूल और नोकरी (Job) पर भेजने के लिये उठा कर ही दम लेती

हैं। काश ! इस से बढ़ कर नमाज़, रोज़े और दीगर इ़बादात की अदाएगी का ज़ेह्न बनाए। क्यूं कि **"मां की गोद"** बच्चे की पहली दर्सगाह है। अगर मां नेक सीरत, नमाज़ रोज़े वाली, सुन्नतों की पाबन्द, बा ह़या व बा अख़्लाक़ होगी तो उस की औलाद में भी ऐसी अच्छी आ़दात मुन्तक़िल होंगी और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता मां नेक आ'माल से दूर, ना जाइज़ फ़ेशन करने वाली, गुनाहों भरे टीवी चेनल्ज़ देखने वाली होगी तो येह बुराइयां औलाद में भी आ सकती हैं। आज कल कई वालिदैन अपनी औलाद की ना फ़रमानी पर दिल जलाते, इमाम साह़िबान से दुआ़एं करवाते और औलाद की बद अख़्लाक़ियों के रोने रोते नज़र आते हैं। ह़ालां कि औलाद के बिगाड़ में बसा अवक़ात ख़ुद मां बाप की बे अ़मलियों का भी ह़िस्सा होता है, वालिदैन को ख़ूब ग़ौर करना चाहिये कि ख़ुद उन्हों ने अपनी औलाद की कितनी दीनी ता'लीमो तरबियत की है !

बच्चों को बचपन ही से संभालिये

जिन के बच्चे अभी छोटे हैं उन सब से दरख़्वास्त है कि अभी से अपने घर को सुन्नतों का गहवारा बनाइये। घर को मज़्हबी और दीनी रंग देंगे तो अपनी आख़िरत की बेहतरी के साथ साथ बच्चों की ता'लीमो तरबियत में भी बड़ा फ़ाएदा होगा। घर को नेकियों भरा घर बनाने के लिये अपने घर में सिर्फ़ो सिर्फ़ दा'वते इस्लामी का चेनल चलाइये। **अल्लाह** करीम और उस के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक नाम नन्हे मुन्ने बच्चों के कानों में रस घोलता रहेगा और اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم अभी से दिल में मह़ब्बते रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शम्अ़ फ़रोज़ां हो जाएगी। अपने बच्चों को म्यूज़ीकल खिलोनों और ऐसी तक़्रीबात से भी बचाइये जिस में म्यूज़िक

बजाया जाता हो । आज बचाएंगे तो आगे बच सकेंगे । अपने बच्चों को हुक़ूकु़ल इ़बाद (या'नी बन्दों के ह़क़) के ह़वाले से भी सिखाइये कि हमें किसी का ह़क़ नहीं मारना और न किसी की कोई चीज़ चुरानी है। इस ह़वाले से उम्मे अ़त्तार की सीरत का एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ पढ़िये :

उम्मे अ़त्तार की बा'ज़ ख़ुसूसिय्यात

अमीरे अहले सुन्नत की अम्मीजान में बा'ज़ और भी ख़ूबियां थीं जैसा कि किसी का माल नाह़क़ न खाना, कोई चीज़ भूल जाए तो उस के लिये दिल जलाना, बिग़ैर इजाज़त किसी की चीज़ ख़ुद से न लेना वग़ैरा। आप ऐसे काम करने वालों से नाराज़ होतीं और फ़रमातीं : बा'ज़ औ़रतें सब्ज़ियां लेने जाती हैं और बिग़ैर इजाज़त अपनी थेली में मिर्चें वग़ैरा उठा कर डाल लेती हैं। ऐसा नहीं करना चाहिये। ह़ालां कि उस दौर में येह आ़म बात थी कि सब्ज़ी के साथ मिर्च, धनिया वग़ैरा दुकानदार ख़ुद ही दे देता था, इस के बा वुजूद इतनी एह़तियात़ मरह़बा ।

वाक़ेई ! अल्लाह के नेक बन्दों की कमी नहीं । याद रखिये ! हुक़ूकु़ल इ़बाद का मुआ़मला बहुत नाज़ुक है। ब ज़ाहिर छोटी नज़र आने वाली ह़क़ तलफ़ी भी क़ब्रो ह़श्र के इम्तिह़ान में फंसा सकती है लिहाज़ा किसी का छोटे से छोटा ह़क़ भी ज़ाएअ़ न करें, न जाने कौन सा गुनाह आख़िरत में फंसा दे ।

एक तिन्के ने जन्नत से रोक दिया

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक इसराईली शख़्स ने अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा की, सत्तर साल तक लगातार इस त़रह़ बन्दगी करता रहा कि दिन को रोज़ा रखता

और रात को जाग कर इ़बादत करता, न कोई उ़म्दा ग़िज़ा खाता न किसी साए के नीचे आराम करता। उस के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह** पाक ने मेरा ह़िसाब लिया, फिर सारे गुनाह बख़्श दिये मगर एक लकड़ी जिस से मैं ने उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर दांतों में ख़िलाल कर लिया था (और येह मुआ़मला हुक़ूक़ुल इ़बाद का था) और वोह मुआ़फ़ करवाना रह गया था इस की वज्ह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूं। (تنبیہ المغترین، ص51)

याद रखिये ! किसी का माल नाह़क़ त़रीक़े से लेना ना जाइज़ व गुनाह और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। क़ुरआने करीम में भी इस की बुराई बयान की गई है जैसा कि पारह 2 **सूरतुल बक़रह** आयत नम्बर 188 में इर्शाद होता है :

﴿وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَیْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "और आपस में एक दूसरे का माल नाह़क़ न खाओ।"

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयत के तह़्त लिखते हैं : इस आयत में बात़िल त़ौर पर किसी का माल खाना ह़राम फ़रमाया गया ख़्वाह लूट कर हो या छीन कर, चोरी से या जूए से या ह़राम तमाशों या ह़राम कामों या ह़राम चीज़ों के बदले या रिश्वत या झूटी गवाही से येह सब मम्नूअ़ व ह़राम है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 54)

उम्मे अ़त्तार के वाक़िए की मदनी बहार

उम्मे अ़त्तार की एक एह़तियात़ दा'वते इस्लामी के चेनल पर बयान

हुई तो इस की एक मदनी बहार यूं ज़ाहिर हुई कि एक इस्लामी भाई घर में अपने बच्चों की अम्मी के साथ दा'वते इस्लामी का चेनल देख रहे थे। उम्मे अ़त्तार का येह वाक़िआ़ सुन कर उन के बच्चों की अम्मी बोलीं : आप आज सुब्ह़ जो सब्ज़ी लाए थे उस में छोटा सा चुक़न्दर भी था। येह सुन कर उन के बच्चों के अब्बू ने जवाब दिया : मैं ने तो चुक़न्दर नहीं ख़रीदा था। उन के बच्चों के अब्बू ने रात के इस पहर दुकान बन्द हो जाने का ख़याल कर के अगले दिन जब सब्ज़ी वाले को येह बता कर मज़ीद रक़म लेने का कहा तो सब्ज़ी वाले का जवाब बड़ा ख़ूब था ! वोह बोला : जनाब ! चुक़न्दर ज़ाइद चले जाने का मस्अला नहीं लेकिन आप ने जो सब्ज़ी ली थी उस में चुक़न्दर आ जाने की वज्ह से आप की मत़लूबा सब्ज़ी की मिक़्दार में कमी हो गई होगी, अब जब आप मुझ से वोह सब्ज़ी लें तो मुझे बताइयेगा मैं इतने वज़्न की सब्ज़ी ज़ियादा डाल दूंगा। (प्रोग्राम : पुरानी यादें, क़िस्त़ : 32)

उम्मे अ़त्तार की एह़तियात़

औलाद की सलाहि़य्यतों और ख़ूबियों में वालिदैन का भी हि़स्सा होता है। नेक और अच्छी आ़दात वालिदैन से बच्चों में भी मुन्तक़िल हो सकती हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! उम्मे अ़त्तार वक़्तन फ़ वक़्तन तौबा करती रहतीं, कभी ऐसा भी हुवा कि कहीं कुछ ऐसी बात हो गई जिस में कुफ़्रिय्या पहलू का शक होता तो उस पर अपने जवांसाल बेटे अमीरे अहले सुन्नत से पूछा : ऐसा कहना कुफ़्र तो नहीं ? इन्तिक़ाल से चन्द दिन पहले भाई, बहनों ने जम्अ़ हो कर तौबा व तज्दीदे ईमान की सआ़दत ह़ासिल की और उम्मे अ़त्तार ने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी इतवार भी तौबा व एह़तियात़न तज्दीदे ईमान की सआ़दत पाई।

तौबा करने वाला

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज कल ह़ालात बहुत ज़ियादा नाज़ुक हैं, ईमान की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न कम हो गया है ! ईमान को संभालना बहुत ज़रूरी है । मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आएगा कि उस वक़्त लोगों के दरमियान अपने दीन पर सब्र करने वाला, आग की चिंगारी पकड़ने वाले की त़रह़ होगा ।

(ترمذی،4/115،حدیث2267)

मदनी मश्वरा

रोज़ाना कम अज़ कम एक बार मसलन सोने से क़ब्ल (या जब चाहें) एह़तियात़ी तौबा व तज्दीदे ईमान कर लीजिये । (और अगर ब आसानी गवाह दस्तयाब हों तो मियां बीवी तौबा कर के घर के अन्दर ही कभी कभी एह़तियातन तज्दीदे निकाह़ कर लिया करें । मां, बाप, बहन भाई और औलाद वग़ैरा आ़क़िल व बालिग़ मुसल्मान मर्द व औ़रत निकाह़ के गवाह बन सकते हैं । एह़तियात़ी तज्दीदे निकाह़ के लिये मह्र की भी ज़रूरत नहीं ।)

ह़कीम ने बिग़ैर ऑपरेशन इलाज कर दिया

"दा'वते इस्लामी" के क़ियाम से क़ब्ल एक बार अमीरे अहले सुन्नत के गले में काफ़ी तक्लीफ़ हुई और फोड़ा सा हो गया । डॉक्टर के इ़लाज से फ़ाएदा न हुवा तो उस ने कहा : हो सकता है ऑपरेशन करवाना पड़े । आप की अम्मीजान आप को एक मश्हूर देसी मत़ब ले गईं । ह़कीम साह़िब ने चेकअप कर के कुछ देसी दवाएं खाने और ग़रग़रे के लिये दीं । **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत से वोह मरज़ ऐसा गया कि फिर दोबारा पलट कर न आया । (प्रोग्राम : पुरानी यादें, क़िस्त : 28 ब तग़य्युर)

ख़ारिश कैसे ठीक हुई !

अमीरे अहले सुन्नत की प्यारी प्यारी अम्मीजान को सालों तक हथेलियों में परेशान कुन "मीठी खुजली" ने दिक़ (या'नी परेशान) किया, किसी इलाज से न जाती थी। किसी के बताने के मुताबिक़ उन्हों ने मेहंदी पानी के ज़रीए ज़रा पतली कर के उस में मुनासिब मिक़्दार में लीमूं निचोड़ कर थोड़ा सा नीला थोथा[1] शामिल कर के ख़ारिश पर लगाना शुरूअ़ किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! उन को फ़ाएदा हो गया।[2] (घरेलू इलाज, स. 39)

है सब्र तो ख़ज़ानए फ़िरदौस भाइयो ! आ़शिक़ के लब पे शिक्वा कभी भी न आ सके

खेल का एक मैदान

छोटी औलाद उ़मूमन मां बाप को कुछ ज़ियादा ही अच्छी लगती है ऐसा ही मुआ़मला अमीरे अहले सुन्नत के साथ था क्यूं कि आप घर में सब से छोटे थे। अम्मीजान आप को कहीं दूर न जाने देतीं। अमीरे अहले सुन्नत के बचपन के एक दोस्त का कुछ इस त़रह़ बयान है : अमीरे अहले सुन्नत के घर से थोड़े से फ़ासिले पर एक खेल का मैदान था। घर और मैदान के दरमियान एक चौड़ा रोड था जिस पर गाड़ियों की आमदो रफ़्त रहती थी। अमीरे अहले सुन्नत की अम्मीजान अपने बेटे "**बाबू**" से मह़ब्बत की बिना पर इन को रोड़ पार जाने से मन्अ़ फ़रमातीं और उन के फ़रमां बरदार बेटे भी अम्मीजान की इत़ाअ़त करते। एक मरतबा मैं (या'नी उसी दोस्त) ने आप को रोड पार मैदान में खेलने के लिये चलने को कहा तो आप ने फ़रमाया : नहीं, मेरी मां ने मुझे वहां जाने से मन्अ़ किया है। दोस्त ने कहा : अभी मां

1... येह ज़ह्र है, पन्सारी के यहां मिल सकता है।

2... त़बीब के मश्वरे से येह इलाज ता हुसूले शिफ़ा जारी रखना चाहिये। अगर फिर ख़ारिश हो जाए तो दोबारा भी येही इलाज कर लेना चाहिये।

कहां देख रही है ! पूछे तो कह देना कि मैं नहीं गया था। आप ने बे साख़्ता फ़रमाया : **“मैं झूट नहीं बोलूंगा।”** (प्रोग्राम : पुरानी यादें, क़िस्त : 22)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! जहां इस वाक़िए में बेटे पर मां की शफ़्क़त का बयान है वहीं मां की इताअ़त की बेहतरीन मिसाल भी है। छोटे बच्चों को चाहिये कि वोह अपने मां बाप की फ़रमां बरदारी करें कि इन की इताअ़त में अ़ज़्मत है। मां बाप की दुआ़ औलाद की क़िस्मत बदल कर रख देती है। अमीरे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मुझे येह खु़शी है कि मेरी मां इस ह़ाल में दुन्या से गईं कि मेरा हुस्ने ज़न है वोह मुझ से खु़श थीं और मैं कहता हूं कि आज मुझे जो कुछ ह़ासिल है **“येह शायद मेरी मां की दुआ़ का नतीजा है।”** (ऑडियो बयान : इन्सान की तख़्लीक़ का मक़्सद, ब तग़य्युर)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अम्मीजान का इन्तिक़ाले पुर मलाल[1]

अमीरे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं : अम्मीजान के इन्तिक़ाल शरीफ़ से तक़रीबन एक साल क़ब्ल बड़े भाई 15 मुह़र्रमुल ह़राम को 40 या 45 साल की उ़म्र में ट्रेन के ह़ादिसे में फ़ौत हो गए, अम्मीजान को इस का बेह़द सदमा था। अम्मीजान बेटे के ग़म में रोतीं और अन्दर ही अन्दर घुलती रहती थीं। 17 सफ़र शरीफ़ 1398 हिजरी को शबे जुमुआ़ रात तक़रीबन सवा दस बजे अम्मीजान फ़ौत हो गईं। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

जिस जगह पर विसाले मुबारक हुवा　　वोह महक्ती थी यूं जैसे गुलज़ार सा

1... रिसाले के शुरूअ़ में अमीरे अहले सुन्नत की अम्मीजान के इन्तिक़ाले पुर मलाल के मुकम्मल वाक़िए का बयान है। यहां आगे की कैफ़िय्यत का कुछ बयान है।

जुमुए़ को फ़ौत होने वाले का सवाब

अल्लाह पाक की उम्मे अ़त्तार के मज़ार पर रह़मतों की बरसात हो । ماشآءَاللہ ! इन्हें शबे जुमुआ़ नसीब हुई । शबे जुमुआ़ फ़ौत होने वाला ख़ुश नसीब "**शहीद**" का दरजा पाता है । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स रोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ इन्तिक़ाल कर गया वोह अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा लिया गया और वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस पर शहीद की मोहर होगी ।" (حلیۃ الاولیاء،3/181،حدیث:3629)

क़ब्र की आज़्माइश से मह़फ़ूज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो मुसल्मान रोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ वफ़ात पा जाए वोह क़ब्र की आज़्माइश से मह़फ़ूज़ रहेगा ।" (ترمذی،2/339،حدیث:1076)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

बा जमाअ़त नमाज़ का अ़ज़ीम जज़्बा

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक के करम से शुरूअ़ ही से बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने का ज़ेहन था । यहां तक कि जब मेरी अम्मीजान का इन्तिक़ाल हुवा तो उस वक़्त घर में दूसरा कोई मर्द न था, मैं अकेला था मगर اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! मां की मय्यित छोड़ कर मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने की सआ़दत पाई । मां के ग़म में दौराने नमाज़ मेरे आंसू ज़रूर बह रहे थे मगर इस सूरते ह़ाल में भी اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! जमाअ़त न छूटी । इसी त़रह़ शादी वाले दिन भी ग़ालिबन तमाम नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करने की सआ़दत ह़ासिल हुई ।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हलका सा सर में दर्द हो या नज़्ला हो जाए, बुख़ार आ जाए या कोई ख़ुशी ग़मी का मौक़अ़ आ जाए कई नमाज़ियों की जमाअ़त बल्कि नमाज़ ही छूट जाती है। अफ़्सोस ! नमाज़ियों का भी नमाज़े बा जमाअ़त का ज़ेह्न कम रह गया है।

हज़रते अ़ल्लामा सय्यिद मह़मूद अह़मद रज़वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हर आ़क़िल, बालिग़, हुर (या'नी आज़ाद) और क़ादिर (या'नी जो क़ुदरत रखता हो उस) मुसल्मान (मर्द) पर जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना वाजिब है और बिला उ़ज़्र (या'नी बिग़ैर किसी मजबूरी के) एक बार भी जमाअ़त छोड़ने वाला गुनहगार है और कई बार तर्क फ़िस्क़ है। (فیوض الباری،3/297بتغیر قلیل)

अमीरे अहले सुन्नत का वालिदा की मय्यित छोड़ कर बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ाना हमारे लिये बाइ़से तक्लीद है कि चाहे कैसी ही आफ़तो मुसीबत आ पड़े उस वक़्त तक नमाज़े बा जमाअ़त नहीं छूटनी चाहिये जब तक शरीअ़त इजाज़त न दे। **अल्लाह** करीम अमीरे अहले सुन्नत के सदक़े हमें पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त और वोह भी ज़हे नसीब पहली सफ़ में अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

अम्मीजान की नमाज़े जनाज़ा

अमीरे अहले सुन्नत की अम्मीजान की नमाज़े जनाज़ा जुमुआ़ के दिन ग़ालिबन नमाज़े जुमुआ़ से क़ब्ल नूर मस्जिद (जहां आप नमाज़ पढ़ाते थे) के बाहर अदा की गई। नमाज़े जनाज़ा में क़िब्ला हज़रते अ़ल्लामा

मौलाना क़ारी मुह़म्मद मुस्लिहु़द्दीन क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه[1] भी तशरीफ़ लाए। अमीरे अहले सुन्नत ने उन्हें नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने की अ़र्ज़ की तो आप ने अमीरे अहले सुन्नत को **"आप की वालिदा हैं, आप पढ़ाइये"** फ़रमा कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने का फ़रमाया और यूं बेटे ही ने अपनी अम्मीजान की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

मय्यित से ज़ाहिर होने वाली ह़ैरत अंगेज़ बातें

ह़ाजी मुह़म्मद ह़नीफ़ बिल्लू[2] कुछ इस त़रह़ बयान करते हैं : जब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अम्मीजान फ़ौत हुई तो थोड़ी देर बा'द कुछ इस्लामी भाई ता'ज़ियत के लिये ह़ाज़िर हुए, मैं भी उन में शामिल था। वालिदा की मय्यित घर में रखी थी, अमीरे अहले सुन्नत सदमे से निढाल हो कर बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के अश्आ़र से कुछ इस त़रह़ फ़रियाद कर रहे थे :

ऐ शाफ़ेए़ उमम शहे ज़ी जाह ले ख़बर   लिल्लाह ले ख़बर मेरी लिल्लाह ले ख़बर

दूसरे दिन मैं (या'नी ह़ाजी ह़नीफ़ बिल्लू) ने अमीरे अहले सुन्नत को बताया कि जिस वक़्त आप अम्मीजान की मय्यित के क़रीब रो रो कर बारगाहे रिसालत में फ़रियाद कर रहे थे, आप की अम्मीजान मुझे मुख़ात़ब कर के मेमनी ज़बान में फ़रमाने लगीं : (खुलासा) "इल्यास से कह दो रन्जीदा न

1... ह़ज़रते मौलाना क़ारी मुस्लिहु़द्दीन सिद्दीक़ी क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 1326 हिजरी को ज़िलअ़ नांदेड़, हैदरआबाद दक्कन हिन्द में हुई। आप आ़लिमे बा अ़मल, ख़ुश इल्ह़ान क़ारी, उस्ताज़ुल उ़लमा और शैख़े त़रीक़त थे। 7 जुमादल उख़्रा 1403 हिजरी को विसाल फ़रमाया। मज़ारे मुबारक मुस्लिहु़द्दीन गार्डन में है। (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना)

2... शहीद ह़ाजी मुह़म्मद ह़नीफ़ बिल्लू शुरूअ़ में एक मॉडर्न नौ जवान थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم ! अमीरे अहले सुन्नत की इन्फ़िरादी कोशिश की बरकत से दीनी माह़ोल अपनाया, नमाज़ी बने और चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी सजाई।

हो, मैं बहुत ख़ुश हूं।" येह सुन कर मैं समझा कि शायद मुझे वह्म हुवा है, भला मय्यित कैसे बोल सकती है ? लिहाज़ा मैं ने आप से तज़्किरा नहीं किया। तदफ़ीन वाले दिन मैं अपने कमरे में सोने के लिये जब लैटा, अभी जाग ही रहा था कि मेरे सामने आप की मर्हूमा वालिदा आ कर खड़ी हो गईं और मेमनी ज़बान में फ़रमाने लगीं : (मफ़्हूम) तुम ने मेरे बेटे इल्यास को अभी तक पैग़ाम क्यूं नहीं दिया कि "वोह रन्जीदा न हो, मैं बहुत ख़ुश हूं।" येह सुन कर मैं तअ़ज्जुब में पड़ा और किसी अहले इल्म को मैं ने येह बातें बता कर मस्अला मा'लूम किया कि मेरे साथ येह क्या हो रहा है, क्या वाक़ेई मुर्दे कलाम करते और इस त़रह़ के इख़्तियारात रखते हैं ? इस पर उन्हों ने मुझे दलाइल दे कर समझाया कि इस त़रह़ के वाक़िआ़त से हमारी किताबें भरी हुई हैं। **अल्लाह** पाक अपने फ़ज़्लो करम से अपने पसन्दीदा बन्दों को बहुत सारे इख़्तियारात देता है।[(1)] लिहाज़ा मैं मुत़्मइन हुवा तब आप को येह सारी बातें बताई हैं। ह़ाजी ह़नीफ़ बिल्लू साह़िब ने बा'द में येह भी बताया कि मैं अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को उन की वालिदा का पैग़ाम सुना कर जूंही पलटा फ़ौरन उन की वालिदए मर्हूमा का चेहरा मेरी निगाहों के सामने उभरा, दो अल्फ़ाज़ मैं ने सुने, और ग़ाइब हो गया। वोह दो अल्फ़ाज़ येह थे : "**शुक्रिय्या मेह्रबानी।**"

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاهِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

1... फ़ौत शुदा अफ़्राद के ज़िन्दा होने नीज़ मौत और क़ब्र के बारे में कई अहम मा'लूमात पर मुश्तमिल ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की तक़रीबन 500 साल पुरानी किताब "**शर्ह़ुस्सुदूर**" पढ़िये।

उम्मे अ़त्तार के मज़ार के साथ ग़ुलाम यासीन क़ादिरी कौन हैं ?

अमीरे अहले सुन्नत की अम्मीजान के मज़ार शरीफ़ के साथ "ग़ुलाम यासीन क़ादिरी" नामी इस्लामी भाई की क़ब्र है। येह सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना ह़ज़रत मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मुरीद होने की वज्ह से ज़ियाई थे और अमीरे अहले सुन्नत से बेह़द मह़ब्बत करते थे। अमीरे अहले सुन्नत बारहा इन के घर तशरीफ़ ले जाते। उम्मे अ़त्तार की क़ब्र के साथ एक चबूतरा था जहां बैठ कर फ़ातिह़ा वग़ैरा पढ़ी जाती थी। ग़ुलाम यासीन क़ादिरी को ब्लड केन्सर हुवा और वोह फ़ौत हो गए तो उस चबूतरे की जगह उन की क़ब्र बना दी गई ताकि अम्मीजान की क़ब्र पर ह़ाज़िरी के वक़्त उन के पास भी आना होता रहे। **अल्लाह** पाक उन्हें ग़रीके़ रह़मत फ़रमाए। (प्रोग्राम : पुरानी यादें, क़िस्त़ : 7)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

उम्मे अ़त्तार और जामिअ़ातुल मदीना (गर्ल्ज़)

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! सालहा साल से आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" में दर्से निज़ामी करने वाली इस्लामी बहनों की सालाना तक़रीबे रिदापोशी अमीरे अहले सुन्नत की अम्मीजान के यौमे वफ़ात की निस्बत से 17 सफ़र शरीफ़ को होती है। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत से अब तक हज़ारों ख़ुश नसीब इस्लामी बहनें दीनी उ़लूम पर मब्नी कोर्स "**दर्से निज़ामी**" से मुशर्रफ़ हो चुकी हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الْكَرِيْم ! ता ह़ाल 11 अगस्त 2023 ई. मजलिसे जामिअ़ातुल मदीना (गर्ल्ज़) की ख़बर के मुत़ाबिक़ तक़रीबन 14253 इस्लामी बहनें 6 सालह दर्से निज़ामी कोर्स और 6123 त़ालिबात 3 सालह फ़र्ज़ उ़लूम पर मुश्तमिल कोर्स "फ़ैज़ाने शरीअ़त" की सआ़दत पा चुकी हैं और इन में कई ऐसी भी हैं जो इ़ल्मे दीन का फ़ैज़ान

आ़म करने के लिये दा'वते इस्लामी के मुख़्तलिफ़ शो'बों में दीनी ख़िदमात में मसरूफ़े अ़मल हैं।

तेरा घर ख़िदमते दीं का मर्कज़ बना   हम पे एह़सान है तेरे अ़त्तार का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नाज़िल हों सदा रह़मत के गुहर

नाज़िल हों सदा रह़मत के गुहर, अ़त्तार की प्यारी अम्मी पर
हो प्यारे नबी की ख़ास नज़र, अ़त्तार की प्यारी अम्मी पर
मिल्लत को दिया ऐसा बेटा, सुन्नत का अ़लम जिस ने थामा
हो नूर की बारिश शामो सह़र, अ़त्तार की प्यारी अम्मी पर
मौला ! येह घराना शाद रहे, ता ह़श्र यूंही आबाद रहे
फ़ैज़ान करम के हों गुलतर, अ़त्तार की प्यारी अम्मी पर

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

यौमे पाक आ गया उम्मे अ़त्तार का

(17 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र यौमे मुबारक उम्मे अ़त्तार)

यौमे पाक आ गया उम्मे अ़त्तार का   मौला मरक़द दिखा उम्मे अ़त्तार का
हूं मैं अदना गदा उम्मे अ़त्तार का   ख़ुश नसीबी मेरी सग हूं अ़त्तार का
इन की तुर्बत पे बारिश हो अन्वार की   मौला रुत्बा बढ़ा उम्मे अ़त्तार का
जिस जगह पर विसाले मुबारक हुवा   वोह महक्ती थी यूं जैसे गुलज़ार सा
तेरी औलाद और सारे अह़बाब पर   रब की रह़मत रहे लुत़्फ़ सरकार का
ह़श्र तक तेरे अह़बाब फूलें फलें   बोलबाला रहे तेरे अ़त्तार का
पिदरे अ़त्तार पर कर करम या ख़ुदा   साथ जन्नत में दे इन को सरकार का
तेरा घर ख़िदमते दीं का मर्कज़ बना   हम पे एह़सान है तेरे अ़त्तार का
इन से अ़त्तार सी हम को ने'मत मिली   ह़क़ हो कैसे अदा उम्मे अ़त्तार का
दर पे ह़ाज़िर हूं मैं इक निगाहे करम   काम बन जाएगा एक बदकार का

۷۸۶
مدینہ قفلِ مدینہ مدینہ
۹۲

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللہ ۸ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَاحَبِیْبَ اللہ

سگِ مدینہ **محمد الیاس** عطّار
ابو بلال قادری رضوی

مدینہ

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

"جو اللہ اور قیامت پر ایمان رکھتا ہے اُسے چاہیے کہ بھلائی کی بات کرے یا چُپ رہے۔"
(بخاری، حدیث: 6018)

میری پیاری ماں کی برسی کی تاریخ 17 صَفَر ہے۔ ہو سکے تو کم از کم 17 بار دُرود شریف پڑھ کر ایصالِ ثواب کر کے یہ دُعائے عطّار حاصل کیجئے:
اللہ پاک آپ کو اور ساری اُمّت کو بخشے۔ اٰمین بجاہِ النبی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!
صَلَّی اللہُ عَلٰی محمّد